ओ३म्

आर्य मार्तण्ड

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजापार्क, जयपुर

वर्ष 97 अंक 14 पृष्ठ 16 मूल्य ₹5/- अप्रैल द्वितीय प्रकाशन 21 अप्रैल से 04 मई, 2023

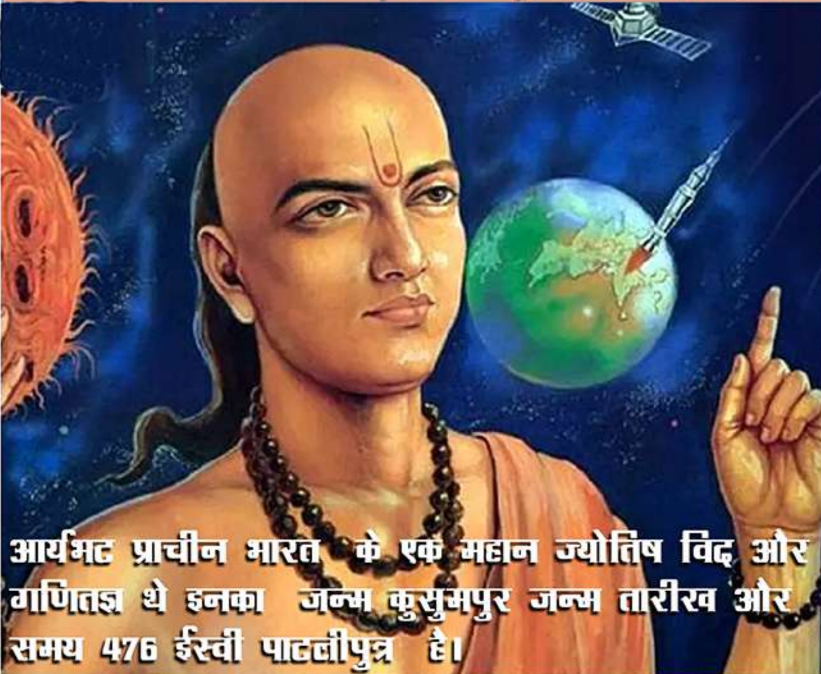

आर्यभट प्राचीन भारत के एक महान ज्योतिष विद् और गणितज्ञ थे इनका जन्म कुसुमपुर जन्म तारीख और समय 476 ईस्वी पाटलीपुत्र है।

08-04-1857 को बलिदान दिवस।

जलियाँवाला बाग हत्याकांड भारत के पंजाब प्रान्त के अमृतसर में स्वर्ण मन्दिर के निकट जलियाँवाला बाग में 13 अप्रैल 1919 को हुआ था।

उदयपुर 7/अप्रैल/2023 श्रीमत दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के मंत्री श्री भवानी दास आर्य के आवास पर आचार्य श्री चन्द्र शेखर शर्मा जी के ब्रह्मत्व में आयोजित अथर्ववेद पारायण यज्ञ में आहुति देते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री किशन लाल जी गहलोत, मंत्री श्री जीववर्धन जी शास्त्री।

शोक संदेश भावभीनी श्रद्धांजलि

श्रीमान रतन लाल जी शर्मा संस्थापक आर्य समाज बदनोर, स्वर्गवास दिनांक 9–अप्रैल–2023।

अंतरराष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के पूर्व आचार्य श्री विद्या देव का स्वर्गवास 10–अप्रैल–2023 नोएडा में।

आर. एन. आई. नं. 10471/60

ओ३म्

आर्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राज. का मुखपत्र

वैशाख, कृष्णपक्ष, अमावस्या, सम्वत् 2080, कलि सम्वत् 5124, दयानन्दाब्द 199, सृष्टि सम्वत् 01,96,08,53,124

संरक्षक

1. डॉ. रमेशचन्द गुप्ता, अमेरिका
2. श्री दीनदयाल गुप्त (डॉलर फाउन्डेशन)

प्रेरणा स्रोत

1. श्री विजयसिंह भाटी
2. श्री जयसिंह गहलोत

सम्पादक

1. श्री जीव वर्धन शास्त्री

परामर्शक

1. डॉ. मोक्षराज

सम्पादक मण्डल

1. डॉ. सुधीर कुमार शर्मा 2. श्री अशोक कुमार शर्मा
3. डॉ. सन्दीपन कुमार आर्य 4. श्री नरदेव आर्य
5. श्री बलवन्त निडर 6. श्री ओमप्रकाश आर्य

आर्य मार्तण्ड

वार्षिक सदस्यता शुल्क	–	**रु. 100/–**
पाक्षिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 2100/–
मासिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 5100/–
षाण्मासिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 11000/–
वार्षिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 21000/–

प्रकाशक

आर्य प्रतिनिध सभा राजस्थान राजापार्क,

जयपुर – 302004

0141–2621879, 9314032161

e-mail : aryapratinidhisabhrajasthan@gmail.com

मुद्रण : दिनांक 20.04.2023

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।।

विषयानुक्रम

– महर्षि की 200वीं जयंती 04

– वैदिक साहित्य में मानव मूल्य 10

– समाचार – वीथिका 12

आर्य मार्तण्ड पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी प्रतिवाद हेतु न्याय क्षेत्र जयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

दि राजस्थान स्टेट को–ऑपरेटिव बैंक लि.
खाता धारक का नामः–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर
खाता संख्या :– **10008101110072004**
IFSC Code :- RSCB0000008
सभा को दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।
AAHAA5823D/08/2020-21/S-008/80G

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री जीव वर्धन शास्त्री ने स्वामी आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजापार्क जयपुर की ओर से वी.के. प्रिन्टर्स सुदर्शनपुरा जयपुर से आर्य मार्तण्ड पत्रिका मुद्रित कराई और आर्य प्रतिनिधि सभा राजापार्क जयुपर से प्रकाशित सम्पादक– **श्री जीव वर्धन शास्त्री–मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा**

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती के वृहद् आयोजनों की श्रृंखला में आर्यसमाज का 148वां स्थापना दिवस समारोहपूर्वक सम्पन्न भारत के गृह एवं सहकारिता मंत्री माननीय श्री अमित शाह का विशेष आह्वान एवं उद्बोधन

महर्षि की 200वीं जयंती और 150वां स्थापना दिवस आर्य समाज को द्रुतगति से आगे बढ़ाने का अवसर

एक नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़े, आर्यसमाज

– अमित शाह

मंच का सम्बोधन –

आज के इस महत्त्वपूर्ण और ऐतिहासिक अवसर पर मेरे साथ मंच पर उपस्थित महामहिम राज्यपाल, गुजरात, श्रीमान आचार्य देवव्रत, श्री सुरेश चंद्र आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री सुरेंद्र कुमार आर्य, अध्यक्ष अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, श्री पूनम सूरी, अध्यक्ष, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंध कर्त्री कमेटी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, डॉ अशोक कुमार चौहान, श्री सुदर्शन शर्मा, श्री गंगा प्रसाद, पूर्व राज्यपाल सिक्किम, श्री योगेश मुंजाल, श्री धर्मपाल आर्य, श्रीमती सुषमा शर्मा, श्री राधाकृष्ण आर्य और यहाँ पर उपस्थित स्वागत समिति के सभी सदस्यगण और इतनी बड़ी संख्या में आए हुए आर्य बन्धुओं और भगिनियों को मेरा प्रणाम, नमस्कार।

देश की सोई हुई आत्मा को जागृत करने वाले थे– महर्षि दयानन्द आज का दिन हम सबके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण दिन है, क्योंकि कल ही नववर्ष प्रतिपदा के दिन महर्षि दयानन्द जी ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्यसमाज की स्थापना करके महर्षि दयानन्द ने सालों से सोई हुई इस देश की आत्मा को जागृत करने का काम किया था।

समाज सुधारों के जनक थे महर्षि –

महर्षि दयानन्द वह व्यक्ति थे जिन्होंने वेदों के उद्धार का काम किया, वेदों के मूल स्वरूप को उजागर करने का काम किया। देश के सांस्कृतिक और बौद्धिक जागरण की उन्होंने बड़ी तीव्र गति से शुरुआत की और अनेक क्रांतिकारियों के वे प्रेरणा स्रोत रहे। महर्षि की सबसे बड़ी देन वे देश के सामाजिक सुधारों के जनक रहे। महर्षि दयानन्द जी का इस देश पर और पूरी सृष्टि पर युगों–युगों तक उपकार रहेगा, उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना करके अपने विचारों को और कार्यों को स्थायित्व देने काम किया था। आज इस अवसर पर महर्षि दयानंद को हृदय पूर्वक प्रणाम करके मैं अपनी बात की शुरुआत करना चाहता हूँ।

महर्षि ने किया था– स्वराज्य, स्वभाषा और स्वधर्म का प्रचार –

आज के परिदृश्य की पृष्ठभूमि में देखें तो आजादी के अमृत महोत्सव को हम लोग मना रहे हैं, वे महर्षि दयानन्द ही थे जिन्होंने पहली बार स्वतन्त्रता का उद्घोष किया था। स्वराज्य, स्वभाषा और स्वधर्म भी जिस जमाने में पाप था, उन्होंने निर्भीकता के साथ बोलना तो छोड़िए, उस समय भारत में उसका प्रचार–प्रसार कर अनेक लोगों

को आजादी के यज्ञ से जोड़ने का काम किया था। महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जन्म जयन्ती को भारत सरकार मोदी जी के नेतृत्व में मनाने का निर्णय कर ही चुकी है और मोदी जी ने 12 फरवरी को आर्यसमाज के कार्यक्रम में आकर महर्षि दयानन्द के विचारों को न केवल देश बल्कि पूरी दुनिया के सामने बड़े आत्मविश्वास और सम्मान के साथ रखने का काम किया है। मेरे जैसे व्यक्ति के लिए बहुत गर्व की बात है कि ईश्वर ने मुझे उसी भूमि पर जन्म लेने का मौका दिया, जहाँ से महर्षि दयानन्द आए थे।

महर्षि की प्रेरणा से कार्य करते हैं–

प्रधानमंत्री मोदी मेरे जैसे कार्यकर्त्ता के लिए ये बहुत गर्व की बात है और मैं आज आर्यसमाज के सभी बन्धु–भगिनियों को कहना चाहता हूँ कि नरेंद्र भाई मोदी जो जागरण का काम कर रहे हैं, उसकी मूलकल्पना सभी लोगों ने महर्षि दयानन्द के जीवन से और उनके कृतित्व से ही ली है।

सत्यार्थप्रकाश के द्वारा जगत् को सत्य का मार्ग दिखाया –

महर्षि दयानन्द ने अन्धश्रद्धा से घिरे हुए पूरे देश को झकझोर कर जागरूक किया था, ढेर सारी कुरीतियों से समाज को मुक्त किया, सत्य क्या है, वह सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से समग्र जगत के सामने रखने का काम महर्षि दयानन्द ने किया था।

आजादी के लिए लड़ने का हौसला– महर्षि की देन

महर्षि दयानन्द ने अंग्रेजों के शासन के सामने निर्भीकता के साथ अनेक लोगों को क्रांतिवीर बनने की प्रेरणा दी थी। आजादी के लिए लड़ने का हौसला उन्हीं की देन है। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के रूप में एक ऐसी परम्परा की स्थापना की थी, जो हमेशा भारत की उन्नति का और हमारे धर्म के सभी उच्च विचारों का न केवल भारत बल्कि जगत् के कल्याण के लिए कार्य कर रहा है। मैं फिर से एक बार बहुत हृदय से महर्षि दयानन्द जी को प्रणाम करके, उस तेज पुंज से आशीर्वाद लेकर अपनी बात को आगे बढ़ाना चाहता हूँ।

आर्यसमाज ही कर सकता है– पूर्वोत्तर में परिवर्तन, वनवासी क्षेत्रों में शिक्षाक्रान्ति यज्ञ महर्षि की देन

मित्रों, महर्षि दयानन्द की 200 वीं जयंती के साथ–साथ आने वाले 2 सालों में अनेक भव्य कार्यक्रम चलने वाले हैं और 2025 में आर्य समाज के डेढ़ सौ साल पूर्ण होंगे। ये देश के और दुनियाभर में रहने वाले हर भारतीयों के लिए बड़े गर्व का पल और गर्व का दिन है। मैं पूर्वोत्तर में बहुत घूमा हूं, लेकिन आज जिस उच्चारण के साथ पूर्वोत्तर की बच्चियों ने वेदमंत्रों के उच्चारण के साथ यज्ञ में आहुति दे रहीं थीं, यह देखकर मन को परम शांति हुई। पूर्वोत्तर में छाए हुए इतने घनघोर अंधेरे के बीच जैसे बिजली एक आशा का संचार करती है, उसी प्रकार की यह घटना मैंने स्वयं देखी, यज्ञ में मैं भी आहुति दे रहा था, मगर मेरा संपूर्ण ध्यान बच्चों के उद्‌गार और उनकी तेजोमय मुखाकृति की ओर लगा हुआ था। ये कल्याणकारी परिवर्तन केवल और केवल आर्य समाज ही कर सकता है, क्योंकि आर्य समाज पूर्वोत्तर के वनवासी क्षेत्रों में शिक्षा क्रांति यज्ञ का संचालन महर्षि दयानंद के विचारों के अनुसार कर रहा है।

दो वर्षीय आयोजनों के मुद्दों पर बोले गृहमंत्री

आज यहां पर आपने रिश्ते बचाइए, देश

बचाइए, इस महत्वपूर्ण कार्य को आगे ले जाने का निर्णय किया है। प्राकृतिक खेती को भी आपने मुद्दा बनाया है। प्राकृतिक कृषि से न केवल पृथ्वी और मिट्टी का कल्याण होने वाला है, बल्कि गौमाता के संरक्षण और संवर्धन से पूरी दुनिया का भी कल्याण होने वाला है। मैं आचार्य जी को भी हृदय से बधाई देना चाहता हूँ, जिस तन्मयता के साथ और जुनून के साथ आचार्य जी में प्राकृतिक खेती के आंदोलन को पूरे देश भर में चलाया है और मोदी जी ने भी आचार्य जी के इस आंदोलन को सरकार की ओर से पूरा समर्थन करके लाखों किसानों को डी.ए.पी. और यूरिया से मुक्त करके पृथ्वी माता को उर्वरक तथा सबल बनाने का काम किया है और मानव समाज रोगमुक्त करने की ओर कदम बढ़ाया है। इसके लिए आचार्य जी और आर्य समाज को बहुत–बहुत बधाई। नशे के खिलाफ आर्य समाज की लड़ाई बहुत समयोचित है और इस लड़ाई से भी बहुत बड़ा लाभ होने वाला है। जनजाति क्षेत्र के अंदर गले लगाइए, दूरी मिटाइए का कार्यक्रम आर्य समाज के अलावा और कोई नहीं संचालित कर सकता।

150 वर्षों से आर्य समाज निरंतर कर रहा सेवाकार्य –

मित्रो, आर्य समाज की आज सबसे ज्यादा जरूरत तो वनवासी क्षेत्र के जो हमारे बंधु भगिनी हैं, उनको मुख्य धारा से जोड़ना है। उनके जीवन के अंदर हमारे भारतीय मूल सिद्धांतों का प्रकाश करना है। महर्षि दयानंद उस जमाने में पैदा हुए जब 18वीं सदी में भारत गुलामी के घनघोर अंधेरें में घिरा हुआ था। एक छोटी सी घटना से प्रेरणा लेकर सत्य की शोध में निकला हुआ बालक एक दिन महर्षि दयानंद बनकर विश्व का कल्याण कर गया। उन्होंने अपने पीछे आर्य समाज रूपी एक महान परंपरा को छोड़ा। जो पिछले 150 वर्षों से राष्ट्र और मानव सेवा के कार्य कर रहा है।

महर्षि ने किया था, वेदों की ओर लौटो का उद्घोष –

लंबे काल से वेदों के सत्य पर जो मिट्टी जमी थी, महर्षि ने अपने जीवन काल में सारी मिट्टी को हटाकर वेद को फिर से देदीप्यमान करने का काम किया था। स्वदेशी और स्वभाषा का स्वाभिमान महर्षि ने जगाया था। पराधीनता के उस धनघोर अंधेरे में निर्भीकता के साथ वेदों की ओर लौटो की लौ महर्षि ने जगाई थी। महर्षि मानते थे कि वेदों का ज्ञान ही भारत की उन्नति का मूल कारण बनेगा और वेद ज्ञान की अनदेखी के कारण ही भारत की यह अवदशा हुई थी इसलिए उन्होंने वेद ज्ञान को ही मूल आधार मानते हुए पूरा जीवन जिया और वेदों की ओर लौटो का उदघोष किया। आज भी ढेर सारे लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

वैदिक विचारों का दीपक है– आर्य समाज

महर्षि जी समझ चुके थे कि व्यक्ति कितना भी महान हो परंतु उसका जीवनकाल सीमित ही होता है, इसलिए उन्होंने आर्य समाज की 1875 में नींव रखकर हमेशा के लिए अपने वैदिक विचारों के दीपक की लौ जलाने का काम महर्षि दयानंद ने किया। 1875 से 1883 तक के कालखंड के अंदर आर्य समाज एक विशाल वटवृक्ष बन चुका था और उनके जाने के बाद भी लाखों प्रतिभावान शिष्यों ने उनके काम को आगे बढ़ाया है। स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा हंसराज, पं. गुरुदत्त, लाला लाजपत राय इत्यादि देश के युवाओं को देशभक्ति, स्वभाषा और स्वधर्म से जोड़ने का प्रेरक कार्य किया। अफगानिस्तान से लेकर बगदाद तक और

तत्कालीन रंगून तक और भारत में

कन्याकुमारी से लेकर जम्मू काश्मीर और गुजरात तक आर्य समाज को पहुंचाने का कार्य इन महान विभूतियों ने किया।

आर्य समाज के योगदान के उल्लेख के बिना पूरा नहीं– आजादी का इतिहास मित्रों, आजादी के इतिहास को अगर कोई लिखना चाहे मैं भी इतिहास का विद्यार्थी हूँ, इसलिए आजादी के इतिहास का लेखक अगर आर्य समाज का योगदान भूल जाए तो उसे अज्ञानी ही माना जाएगा। आजादी का इतिहास आर्य समाज के उल्लेख के बिना पूरा नहीं हो सकता। अनेक क्रांतिकारियों के निर्माण का कार्य आर्य समाज के गुरुकुलों की श्रृंखलाओं ने किया। आर्य समाज के गुरुकुल, डी. ए.वी. और अन्य शिक्षा संस्थानों ने अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध लोगों को, बच्चों को, युवाओं को, किशोरों को तैयार करने के प्रमुख केंद्र बनाए और असहयोग आंदोलन में भी लाला लाजपत राय और स्वामी श्रद्धानंद ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई थी।

हैदराबाद और गोवा मुक्ति संग्राम के इतिहास को संकलित कर रहा है– गृहमंत्रालय मित्रों आर्य समाज ने बंग भंग का भी पुरजोर विरोध किया था। स्वामी श्रद्धानंद के नेतृत्व में हजारों आर्य समाज के अनुयाई बंग भंग का विरोध करने के लिए समग्र देश से बंगाल पहुंचे थे। हैदराबाद मुक्तिसंग्राम और गोवा मुक्तिसंग्राम में भी आर्य समाज ही सबसे पहले झंडा लेकर आगे निकला था। मैंने हैदराबाद मुक्तिसंग्राम और गोवा के मुक्तिसंग्राम इत्यादि के इतिहास को गृह मंत्रालय की ओर से संकलित करने की पहल की है। यह कार्य अभी चल रहा है, मगर जितना भी खोजते हैं, इतिहास को संकलित करते हैं, उसको पढ़ते हैं तो हर क्षेत्र में देश की एकता, अखंडता के लिए महर्षि के शिष्यों ने ही शुरुआत की है। यह महर्षि दयानंद जी के अनुयाइयों की बहुत बड़ी उपलब्धि है। 1937 में निजाम ने आर्य समाज की वार्षिक बैठक पर जब रोक लगाई थी। उसका भी महात्मा नारायणस्वामी के निर्देशों के तहत डट कर सामना किया गया। सत्याग्रह आंदोलन भी उनके निर्देशों में सफल हुआ। धर्मांतरण की निजाम की नीतियों का भी खुलकर विरोध करने का कार्य भी आर्य समाज ने किया था।

दूर दृष्टा थे, महर्षि दयानन्द

मित्रो, 1857 की क्रांति की विफलता के बाद एक प्रकार से पूरा देश बिखर गया था। लगता था कि हम सदियों तक हम गुलाम रहेंगे और देखते–देखते 90 साल के अल्पकाल के अंदर हमारा देश स्वतंत्र हो गया और उस वक्त महर्षि दयानंद ने इस बात को दूर से देख लिया था कि देश की एक भाषा निश्चित करनी पड़ेगी, संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी को अपनाना होगा। इसलिए जैसे की आचार्य जी ने कहा कि महर्षि ने बोला भी हिंदी में लिखा भी हिंदी में और जीवन जिया भी हिन्दी में संस्कृत के पण्डित होने के बावजूद, मातृभाषा गुजराती होने के बावजूद भी उन्होंने सारे सिद्धांतों को हिंदी में समाहित करके अदभुत दूरदर्शिता का परिचय दिया था। उनकी सोंच थी की भारत को समृद्ध बनाने के लिए संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी भाषा की आवश्यकता रहेगी।

नमस्ते का अभिवादन– महर्षि की देन

जब भी मैं किसी को नमस्ते करता हूं तो महर्षि दयानंद को जरूर याद करता हूं। महर्षि दयानंद न होते तो हम सब भी आपस में हेलो ही करते, आज जब हम नमस्ते करते हैं तो हमेशा महर्षि को याद करते हैं कि इस सर्वकालीन एवं संपूर्ण भारतीय अभिवादन की देन महर्षि दयानंद की ही को भारत कभी नहीं भुला सकता। और

उनके इस उपकार

विश्व को धर्म की अवधारणा का परिचय दिया– महर्षि ने

मित्रो, महर्षि ने ऋगवेद एक वाक्य के द्वारा बताया था कि एक ही परमात्मा को ज्ञानी लोग अनेक नामों से पुकारते हैं। इस वाक्य को नया जीवन देकर उन्होंने पूरे विश्व के अंदर हमारे धर्म को अवधारणा को विशालता का परिचय दिया था। हिंदू धर्म के अनुयाई, आर्य समाज के अनुवाई, कभी संकुचित हो हो नहीं सकते हम तो समग्र ब्रह्मांड को अपना मान कर चलने वाले लोग हैं।

विश्व के 34 देशों में वटवृक्ष बनकर खड़ा है– आर्य समाज

महर्षि दयानन्द के एक–एक वाक्य को उनके अनुयायियों ने अनेक यशस्वी शिष्यों ने अपनाया। लंबी–लंबी समुद्री यात्राएं करके महर्षि के अनुयाइयों ने मारीसस, फिजी, सूरीनाम, गयाना आदि अनेक देशों में आर्य समाज की स्थापना की और आज विश्व के 34 देशों में आर्य समाज का वटवृक्ष बनकर खड़ा हुआ है।

आर्य समाज के सेवा कार्यों का किया वर्णन

डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर से शिक्षा की क्रांति की नींव रखी, वेद विद्या के केंद्रों में गुरुकुल कांगड़ी जैसे विद्यालय शुरू हुए, वंचित वर्ग के बच्चों की पाठशालाओं का निर्माण हुआ, अनाथालय का निर्माण हुआ, महिला शिक्षा का काम शुरू हुआ, विधवाओं के लिए महिला आश्रमों का निर्माण हुआ और विधवा विवाह का भी समर्थन आर्य समाज ने किया है। ये बहुत कार्य छोटे से जीवन में करने की कल्पना करना भी असम्भव है। एक व्यक्ति अपने जीवन के अन्दर इतने सारे आयामों को कैसे छू सकता है और ऐसे अनुयायियों की फौज खड़ी करना जो उनके जाने के बाद उनके जन्म के 200 वर्षों के बाद दिल्ली में पूरा सभागार और विश्व में सभी आर्य समाज महर्षि दयानन्द के प्रति कृतज्ञता के भाव के साथ पूरा देश और जब विश्व को समझ में आएगा तब पूरा विश्व भी युगों–युगों तक महर्षि का कृतज्ञ रहेगा, ऐसा कहने में मुझे को दुविधा नहीं है।

गृहमंत्री जी का आह्वान गति और व्यापकता को बढ़ाए आर्य समाज

मित्रो, मैं आज यहां आया हूं तब आप लोगों को यह जरूर कहना चाहता हूं कि आर्य समाज के सेवा कार्यों को एक नई गति देने की जरूरत है। दिशा तो न बदले मगर गति बढ़ाने की जरूरत है, हम दाएं बाएं न जाएं लेकिन व्यापकता बढ़ाने की जरूरत है। गति और व्यापकता दोनों आगे बढ़ेंगी देश के सामने आज के जो चुनौतियां है उसका हम सामना कर पाएगें।

महसूस होती है– आर्य समाज की जरूरत

वेद का ज्ञान, स्वभाषा, हमारी संस्कृति, शिक्षा के मूल सिद्धांत, उपनिषदों के आधार पर शिक्षा, अंधविश्वास का उन्मूलन, सामाजिक कुरीतियों का विरोध, स्वदेशी आदि हर विषय पर अगर कोई काम कर सकता है तो आर्य समाज ही कर सकता है। आर्य समाज की उस समय जितनी जरूरत थी आज भी उतनी ही जरूरत महसूस होती है।

सरकार के सारे इनीशिएटिव हैं– आर्य समाज के सिद्धांतों पर आधारित

आज एक बहुत बड़ी आशा की किरण हमारे लिए यह है कि देश में नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में सरकार कार्य कर रही है। महामहिम राज्यपाल जी ने बताया है और बारीकी से हम देखेंगे तो सरकार के सारे कार्यकलापों को देखेंगे, तो सरकार

के सारे इनीशिएटिव आर्य समाज के मूल सिद्धांतों पर आधारित हैं। शिक्षा की बात हो, समृद्ध राष्ट्र की कल्पना की बात हो तो यह आर्य समाज का ही विचार है। दुनिया में देश का सम्मान बढ़ाना, योग और आयुर्वेद को पुर्नजीवित करना, हमारी सुसंस्कृति की ओर लौटना यह सब आर्य समाज के ही विचार हैं। इन सब कार्यों को सरकार पुरस्कृत कर रही है। सरकार आर्य समाज के कार्यों को गति दे रही है और सरकार इसके साथ पूरी योजना से चल रही है।

महर्षि की 200वीं जयंती और 150वां स्थापना दिवस, आर्य समाज को द्रुतगति से आगे बढ़ाने का अवसर

मैं तो आज आर्य समाज का आह्वान करना चाहता हूं कि आर्य समाज की गति को बढ़ाइए, आर्य समाज के मूलमंत्र सेवा को हर युवा तक पहुंचाने के लिए आगे बढ़िए। आर्य समाज का 150वां स्थापना दिवस और महर्षि दयानन्द की 200वीं जयंती आर्य समाज को एक बार फिर द्रुत गति से आगे बढ़ने के लिए पुकार रही है। हर आर्य बंधु भगिनी को अपने आपको महर्षि दयानंद जी के लक्ष्य के प्रति समर्पित करने का अवसर है।

एक नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़े– आर्य समाज

यहीं से एक नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़े, यही मेरी आप सब से अभ्यर्थना है। आप लोगों से मिलने की बहुत इच्छा थी, आचार्य जी और स्वागत समिति ने मुझे बुलाया मैं हमेशा आपका ऋणी रहूंगा और महर्षि दयानंद के विचारों के प्रचार–प्रसार के लिए मेरे जीवन के अंत तक जो भी करना पड़े वह करने के लिए मैं हमेशा उपलब्ध रहूंगा।

आप सभी को प्रणाम नमस्कार!

– गृहमंत्री भारत सरकार

आर्यसमाज संस्थान सज्जन नगर के वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए

दिनांक 18.04.2023 यज्ञ सत्संग के पश्चात् आर्यसमाज संस्थान सज्जन नगर की कार्यकारिणी सभा का वार्षिक चुनाव श्री पुनीत शर्मा, मुख्य आयोजना अधिकारी उदयपुर के अधिकारत्व में सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य चुने गए।

1. संस्थापक/संरक्षक – श्री हुकमचंद शास्त्री
2. अध्यक्ष – डॉ देवीलाल गर्ग
3. उपाध्यक्ष – श्री पवन कुमार पटेल
4. सचिव – श्री हेमांग जोशी
5. उपसचिव – श्री दीपक साहू
6. कोषाध्यक्ष – श्रीमती दीपिका पंड्या
7. पुस्तकालयाध्यक्ष – श्रीमती दीपा व्यास
8. प्रचार मंत्री प्रथम – श्री रवीन्द्र कुमार तिवारी
9. प्रचार मंत्री द्वितीय – श्री भावेश देसाई
10. आर्यवीर दल अधिष्ठाता – श्री हिमान्शु तिवारी

अन्तरंग सदस्य

(i) डॉ प्रमोद शास्त्री
(ii) डॉ हंसराज जोशी
(iii) डॉ संजय माहेश्वरी
(iv) श्रीमती सुमन तिवारी
(v) श्रीमती ममता शर्मा
(vi) प्रोफेसर डॉ ललित कौशिक
(vii) श्री विवेक बाकडे
(viii) आचार्य सौरभ

अन्त में शान्तिपाठ, जयघोष एवं प्रसाद वितरण के साथ चुनाव सम्पन्न हुए।

वैदिक साहित्य में मानव मूल्य

– डॉ. योगेन्द्र कुमार धामा

पिछले अंक का शेष भाग...

इसी प्रकार जिन कर्त्तव्यों को करने से मनुष्य को अभ्युदय तथा निःयेसस की प्राप्ति होती है, वहीं धर्म है[11] तथा ईश्वर ने वेदों से मनुष्यों के लिए जिन कर्तव्य कर्मों को करने की आज्ञा दी है, वही धर्म है।[12]

धर्म की उपर्युक्त इन सभी व्याख्याओं से यह सुतरां सिद्ध है कि वस्तुतः जिन कर्त्तव्य कर्मों को करते हुए मनुष्य पशुता से मुक्त होता हुआ इस सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ प्राणी के रूप में स्थापित होता है तथा ऐहिक एवं पारलौकिक आनन्द को अनुभव करता है, वही धर्म है तथा वे ही वास्तव में मानव मूल्य हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त मानव मूल्यों को सुगमता से समझने की दृष्टि से इन्हें प्रमुखतया तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–

1. व्यक्तिगत
2. पारिवारिक
3. सामाजिक

1. व्यक्तिगत मानव मूल्य– इसके अन्तर्गत उन मूल्यों को माना जा सकता है, जो मानव के व्यक्तित्व विकास में सहायक होते हुए उसे जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष तक पहुंचाने में सक्षम होते हैं। यथा यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, –अपरिग्रह), नियम (शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधान) धैर्य, क्षमा, दम, बुद्धि, विद्या, अक्रोध, आस्तिकता, निर्भीकता इत्यादि। इन सभी मूल्यों को अपने अन्दर धारण करने की प्रेरणा वेद हमें प्रायः अनेक स्थलों पर प्रदान करता है।

अहिंसा के भाव को पुष्ट करता हुआ वेद कहता है कि मर्यादा का पालन करने वाले तथा विद्या से प्रकाशित उपदेशक, हमारे शारीरिक दोषों को दूर करो, हिंसा की भावना को दूर करो, कुटिलता और पापयुक्त बुद्धि को दूर करो, इस प्रकार पापों से हमें दूर करो।[13] वस्तुतः हिंसा का दुर्गुण एक पाशविक वृत्ति है, जो अपने से अल्पबल और अल्पज्ञान वाले को दबाने के लिए उत्पन्न होती है। इन्हीं पापों से स्वयं को दूर करने की वेद प्रेरणा प्रदान करता है। इसी प्रकार सत्य[14], अस्तेय[15], ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह[16] इत्यादि सभी मूल्यों के विषय में वेद में पर्याप्त प्रेरणाएं प्राप्त होती है।

ब्रह्मचर्य पालन के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए वेद ने विस्तार से कहा है कि ब्रह्मचर्य के कारण ही सब देव अमर बने तथा ब्रह्मचर्य के सामर्थ्य से ही देवराज इन्द्र (जीवात्मा) सब देवों (इन्द्रियों) को प्रकाशित करता है।[17] कन्या योग्य पति को प्राप्त करती है।[18] जिस प्रकार मेघ अपनी शीतल वर्षा कर सब जगत् को शान्त करता है, उसी प्रकार ब्रह्मचारी अपने ज्ञानामृत की वृष्टि से सब जनता को शान्त करता है[19] इत्यादि।

मन, वचन, कर्म से शुचिता का भाव ही व्यक्ति के अन्दर स्थित सभी दुर्गुणों को दूर कर देता है। यही कारण है कि वैदिक ऋषि मन्त्र के माध्यम से ईश्वर से स्वयं को पवित्रता के भाव से युक्त करने की प्रार्थना करता है।[20]

तप को ईश्वर प्राप्ति का साधन मानकर इसकी महत्ता का वर्णन करते हुए वेद कहता है कि परमात्मा सर्वत्र है और हर एक स्थान में वह व्याप्त है। जो तप करता है, उसको ही उस प्रभु का आनन्द प्राप्त होता है।[21] तैत्तिरीय आरण्यक के अनुसार ऋत, सत्य, श्रुत, शान्त, दम, शम, दान, यज्ञ इत्यादि ही वास्तव में तप हैं।[22]

इसी प्रकार वैदिक ऋषियों ने संतोष, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान, धैर्य, सहनशीलता आदि मानवीय मूल्यों की चर्चा अनेक स्थानों पर अनेकथा की है। मन की श्रेष्ठता एवं शिवसंकल्पत्व की अपेक्षा से यजुर्वेद के 34वें अध्याय में विस्तार से वर्णन किया गया है। श्रेष्ठ बुद्धि एवं विद्या की कामना करते हुए वैदिक ऋषि ने अनेक स्थानों पर परमात्मा की स्तुति की है। जिससे इन मानव मूल्यों को धारण कर मनुष्य अपने व्यक्तित्व के विकास के साथ–साथ समाज का भी कल्याण कर सके।

2. पारिवारिक मूल्य– पारिवारिक मानवीय मूल्यों की दृष्टि से वेद में अनेक सूक्त प्राप्त होते हैं। जिनमें व्यक्ति किस प्रकार माता, पिता, पुत्र, भाई, बहिन एवं बड़ों के साथ व्यवहार कर समाज के लिए आदर्श स्वरूप को प्रस्तुत कर सकता है, इत्यादि विषयों की विस्तार से चर्चा की गई है। वेद कहता है कि पुत्र पिता के अनुकूल कार्य करे और वह माता के साथ शुद्ध मन से व्यवहार करें। पत्नी पति के साथ शांत और मीठा सम्भाषण करें।[24] भाई बहन आपस में द्वेष न करें। कुटुम्ब के सब लोग एक दिल से मिल जुल कर अपना व्यवहार करें।[25] घर के सब लोगों में इस प्रकार का सामंजस्य हो कि जिससे उनमें कदापि विरोध न हो सके और उनमें एक विचार सदा रहे।[26] इसी प्रकार अथर्ववेद के 14वें काण्ड के प्रथम एवं द्वितीय सूक्त में अत्यन्त विस्तारपूर्वक पति–पत्नी के लिए पारिवारिक मूल्यों की स्थापना की गई है। इसी प्रसंग में अन्यत्र वेद ने कहा है कि पति–पत्नी ऐसे व्यवहार करें जिससे उनका परस्पर भय और उद्वेग नष्ट होकर आत्मा की दृढ़ता, उत्साह और गृहस्थाश्रम की सिद्धि से ऐशर्य बढ़े और वे दोष तथा दुःख को छोड़कर चन्द्रमा के तुल्य आहलादित हों।[27] वे परस्पर प्रीति के साथ विद्वान् होकर, पुरुषार्थ से धनवान् श्रेष्ठगुणों से युक्त होके, एक–दूसरे की रक्षा करते हुए धर्मानुकूल होकर, सन्तान को उत्पन्न कर इस संसार में नित्य क्रीड़ा करें।[28] वे यदि परस्पर विरोध को छोड़कर एक दूसरे की प्रीति में तत्पर, विद्या के विचार से युक्त होके प्रयत्न करें तो घर में कल्याण और आरोग्य बढे।[29]

माता–पिता की सेवा के विषय में वेद ने स्पष्ट रूप से कहा है कि हे पुत्रादिकों! तुम मेरे पितरों को अनेक प्रकार के उत्तम उत्तम रस सुख प्राप्त कराने वाले स्वादिष्ट जल, सब रोगों को दूर करने वाले औषधि, मिष्ठान्नादि पदार्थ, दूध, घी, उत्तम उत्तम रीति से पकाया हुआ अन्न तथा रस से चूते हुए पके फलों को देके तृप्त करो। अर्थात् सब मनुष्यों को पुत्र और नौकर आदि को आज्ञा देकर कहना चाहिए कि तुमको हमारे माता पिता आदि अथवा विद्या देने वालों की प्रीतिपूर्वक सेवा करनी चाहिए जैसे उन्होंने बाल्यावस्था या विद्यादान के समय हमारा पालन किया है। वैसे ही हम लोगों को भी सर्वदा सर्वथा उनका सत्कार करना चाहिए जिससे हम लोगों के बीच में विद्या का नाश और कृतज्ञता आदि दोष कभी प्राप्त न हों।[30]

इस प्रकार वैदिक साहित्य में वर्णित ये पारिवारिक मूल्य निश्चित रूप से प्राचीन काल से लेकर आज तक मानव समाज को कल्याण के मार्ग पर चलने को प्रेरित करते रहते हैं।

शेष भाग अगले अंक में....

भूल सुधार– आर्य मार्तण्ड मार्च द्वितीय समाचार वीथिका पृष्ठ संख्या 12 आर्यसमाज छबड़ा का वार्षिकोत्सव में अर्जुन देव चड्ढा के नाम के आगे प्रधान कोटा संभाग छप गया है जबकि वर्तमान में इस पद पर श्री रमेशचन्द्र गोस्वामी है।

समाचार – वीथिका

1. आर्यसमाज खेड़ारसूलपुर, कोटा के चुनाव सम्पन्न– आर्य समाज खेड़ारसूलपुर के चुनाव रविवार को आर्य समाज मंदिर परिसर में राजेन्द्र आर्य मुनि की अध्यक्षता व चुनाव प्रभारी प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान रमेश आर्य की उपस्थिति में हुए। जिसमें सदस्यों ने सर्वसहमति से प्रधान पद पर हीरालाल आर्य को चुना। इसके साथ ही उप प्रधान लालचंद अजमेरा, कोषाध्यक्ष हेमराज कुशवाह, मंत्री कमलेश नामा, उप मंत्री जगदीश सैनी, पुस्तकालय अध्यक्ष महावीर मालव आर्य को नियुक्त किया। पदाधिकारियों ने आर्य समाज में ज्यादा से ज्यादा परिवारों को जोड़कर वेदों में बताए मानव उत्थान की राह पर चलने के लिए संगठन को मजबूत बनाने पर जोर दिया।

2. योग एवं यज्ञ प्रशिक्षण शिविर का समापन– देशभर में महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में बूंदी जिला मुख्यालय पर आर्य समाज, आर्य वीर दल, पतंजलि योग समिति एवं भारत स्वाभिमान न्यास बूंदी के तत्त्वावधान में 16 दिवसीय निःशुल्क योग एवं यज्ञ (क्रियात्मक अभ्यास) प्रशिक्षण शिविर का आयोजन योग भवन, शिव कॉलोनी देवपुरा में किया गया।

कार्यक्रम के समापन में मुख्य अतिथि नगर परिषद आयुक्त महावीर सिंह सिसोदिया, विशिष्ट अतिथि आर्य समाज रामपुरा प्रधान कैलाशचंद बाहेती, आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा, संभागीय संचालक आर्य वीर दल श्री पूरण चंद मित्तल, आचार्य सत्यार्थ मुनि व आचार्य श्रुति सद् मुनि तथा आर्य समाज बूंदी के संरक्षक श्रवण लाल धाभाई थे। कार्यक्रम का शुभारंभ सुश्री पूजा मेघवाल द्वारा भजन की प्रस्तुति से हुआ। इसके बाद शिविर के संचालक अभय देव शर्मा ने शिविर का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, शिविरार्थियों देवी सिंह राणावत, राजेंद्र यादव, रामकरण शर्मा व दिव्यांजलि ने अपने अनुभव बताएं। योग प्रदर्शन में बालक देव शर्मा व बालिका प्रिया शर्मा ने योगासनों का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में सपत्नीक पधारे मुख्य अतिथि के रूप में उद्‌बोधन आयुक्त महावीर सिंह सिसोदिया, श्रुति सदमुनि जी, सत्यार्थ मुनि जी, कैलाश जी बाहेती, अर्जुन देव चड्ढा, पूरणचंद मित्तल, डीएवी कोटा के आचार्य शोभाराम आर्य व अग्निमित्र शास्त्री ने किया। पधारे सभी अतिथियों ने आर्य समाज व युवाओं के स्वास्थ्य व संस्कारों के लिए निरंतर कार्य कर रहे अभयदेव शर्मा व उनकी पत्नी चंचल शर्मा का साफा पहनाकर, दुपट्टा धारण कराकर स्वागत किया व कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की। आर्य समाज प्रधान श्रीराम आर्य व पतंजलि योग समिति के हेमालाल मेघवंशी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन ललित शर्मा ने किया। शांति पाठ से कार्यक्रम का समापन हुआ। प्रेस को यह जानकारी मीडिया प्रभारी अनुराग शर्मा एडवोकेट ने दी।

3. डाक टिकट जारी– महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के अवसर पर माननीय डॉ. सत्यपाल सिंह जी, सांसद, बागपत के प्रयासों से संचार मंत्रालय, भारत सरकार ने विज्ञान भवन, नई दिल्ली में महामहिम उपराष्ट्रपति श्रीमान् जगदीप जी धनखड़ ने डाक टिकट जारी किया। इस अवसर पूज्य आचार्य अग्निव्रत जी ने महामहिम को वैदिक भौतिकी का क्रान्तिकारी

स्वरचित ग्रन्थ 'वेदविज्ञान—आलोक' एवं श्री विशाल आर्य द्वारा रचित 'परिचय वैदिक भौतिकी' भेंट किये।

इस अवसर पर केन्द्रीय संचार राज्य मंत्री माननीय देवु सिंह जी चौहान, पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज, पूज्य स्वामी चिदानन्द जी सरस्वती, पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, सांसद एवं हजारों की संख्या में विद्वान्, विदुषी, संन्यासी एवं आर्यजन उपस्थित रहे।

4. अथर्ववेद पारायण यज्ञ— दिनांक 07/04/2023 को आर्य प्रतिनिधी सभा के प्रधान आदरणीय श्रीमान किशनलाल जी गहलोत और मंत्री आदरणीय श्रीमान जीववर्धन जी शास्त्री ने उदयपुर मे आयोजित अथर्ववेद पारायण यज्ञ मे जो श्रीमद्दयानंद सत्यार्थप्रकाश न्यास के मंत्री आदरणीय श्रीमान भवानीदास जी आर्य के निवास पर आदरणीय आचार्य श्रीमान चन्द्र शेखर जी शर्मा के ब्रह्मत्व मे अनुष्ठान हो रहा है ...में आहुति समर्पित कर हमे गौरव प्रदान किया।

उदयपुर के सभी आर्य जन अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते है।

5. त्रि दृदिवसीय यज्ञ, सत्संग और वेद व्याख्यान का भव्य समापन— भारतीय नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर आर्य समाज मानसरोवर द्वारा आयोजित 'त्रि दृदिवसीय यज्ञ, सत्संग और वेद व्याख्यान' कार्यक्रम का मथुरा उत्तर प्रदेश से पधारे पूज्य स्वामी स्वदेश जी महाराज के ब्रह्मत्व में शानदार तरीके से संपन्न हुआ।

समारोह के पांच सत्र में वृहत यज्ञ, स्थानीय आर्य समाज के महिला—पुरुषों द्वारा ईश भजन और वैदिक विद्वानों आचार्य उषरबुध, आचार्य डॉक्टर कृष्णपाल सिंह, पंडित भगवान सहाय विद्यावाचस्पति, डॉक्टर संदीपन आर्य, वैदिक विदुषी साध्वी डॉक्टर सुमित्रा आर्य, डॉ. मुरारीलाल पारीक, आचार्य अवनीश मैत्री सहित जयपुर की समस्त आर्य समाजों— वैशाली नगर, नींदड़, सांगानेर, मालवीयनगर आदि के पदाधिकारियों, सदस्यों सहित 200 से भी अधिक आर्यजनों ने बढ़ चढ़कर भाग लिए।

पूज्य स्वामी जी बहुत सरल और आमोद प्रमोद की भाषा में वेद मंत्रों और स्वामी दयानंद सरस्वती जी द्वारा प्रतिपादित ग्रंथों में लिखित पंच महायज्ञों, परमेश्वर प्राप्ति का आनंद, जीवन में सत्य आचरण का महत्व, पारिवारिक और सामाजिक संबंधों का महत्व आदि का लघु कथाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का प्रतिनिधित्व राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त आर्य समाज मानसरोवर के मुख्य संरक्षक श्रीमान सज्जन सिंह कोठारी जी ने किया और समाज के पदाधिकारियों सर्वश्री अर्जुन देव कालड़ा, संस्थापक, सुनील कुमार अरोड़ा, प्रधान, तुंग नाथ त्रिपाठी, मंत्री, विनोद मेहरा और कुंदन लाल मक्कड़, उप प्रधान, सतीश मित्तल, उप मंत्री, ओम प्रकाश गुप्ता, कोषाध्यक्ष, डॉक्टर बृज मोहन बंसल, सुरेश साहनी, हर गोपाल मनचंदिया, श्रीमती मंजू ढींगड़ा, श्रीमती मिथिलेश आर्य, महिला आर्य समाज मानसरोवर की प्रधाना श्रीमती सरोज रानी कालड़ा, मंत्राणी श्रीमती सुधा मित्तल सहित समस्त सदस्यों का अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ।

6. दिनांक 2 अप्रेल 2023 को गाँव सांईसर जिला बीकानेर, नोखा भाजपा के अध्यक्ष श्री भंवरलाल जी नैण विश्नोई के घर वेद प्रचार रथ के संचालक स्वामी श्री चेतनानंद सरस्वती जी, बीकानेर आर्य समाज के अध्यक्ष श्रीमान गोवर्धन सिंह आर्य, श्री रैंवता राम जी आर्य गाढवाला,

श्रीमान ओमप्रकाश गोदारा बरसिंहसर सभी ने मिलकर श्री भंवरलाल के सूपुत्र बीकानेर जिला परिषद सदस्य श्रीमान राजूराम जी नैण, श्री हरीश जी नैण को सत्यार्थप्रकाश भेंट करके सम्मानित किया

7. दिनांक 07/04/2023 को आर्य प्रतिनिधी सभा के प्रधान आदरणीय श्रीमान किशनलाल जी गहलोत और मंत्री आदरणीय श्रीमान जीववर्धन जी शास्त्री ने उदयपुर मे आयोजित अथर्ववेद पारायण यज्ञ मे जो श्रीमद्दयानंद सत्यार्थप्रकाश न्यास के मंत्री आदरणीय श्रीमान भवानीदास जी आर्य के निवास पर आदरणीय आचार्य श्रीमान चन्द्र शेखर जी शर्मा के ब्रह्मत्व मे अनुष्ठान हो रहा है...में आहुति समर्पित कर गौरव प्रदान किया। उदयपुर के सभी आर्यजन अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते है

8. पुरुषार्थ और परमात्मा का ध्यान– परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना, संध्या, उपासना, आराधना, भक्ति, ध्यान, पूजा, अर्चना, यज्ञ आदि क्रियाओं पर विचार किया जाए तो सभी लगभग समानार्थी या पर्यायवाची ही प्रतीत होते है। सभी क्रियाएं निराकार परमात्मा से ही संबंधित है। वेदों के अनुसार परमात्मा केवल पुरुषार्थी व्यक्तियों की ही स्तुति, प्रार्थना को स्वीकारता है सुनता है। पुरुषार्थहीन, आलसी को उक्त क्रियाओं से कोई लाभ प्राप्त नहीं होता है। किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम पुरुषार्थी होना अति आवश्यक है। यह देखा जाता है कि काफी व्यक्तियों का ध्यान सदा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने और पुरुषार्थ करने में ही रहता है उनके मन, बुद्धि, दिल और दिमाग में केवल काम काम और लक्ष्य की प्राप्ति ही रहता है। सोते–जागते, उठते–बैठते सदा लक्ष्य की प्राप्ति ही उनके विचारों में रहता है। परमात्मा उनके विचारों में होता ही नहीं है क्योंकि वे तो परमात्मा के अस्तित्व को मानते ही नहीं है। फिर भी अंततः वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर ही लेते हैं या लक्ष्य के अत्यंत नजदीक पहुंच जाते हैं।

ऐसे विद्वानों का मानना है कि अस्तित्वहीन, काल्पनिक परमात्मा का ध्यान करने से तो लक्ष्य से उनका ध्यान हट जाता है और पुरुषार्थ करने में भी कमी आती है।

इस विषय पर आर्य जगत के विद्वानों से मेरा अनुरोध है कि (क्या केवल पुरुषार्थ से ही लक्ष्य प्राप्त हो जाता है?) वे अपना चिंतन, विचार प्रस्तुत कर समस्त आर्य जगत व मानव जाति को अनुग्रहित करने की कृपा करें।

– ओम् प्रकाश गुप्ता–मंत्री आर्य समाज जनता कॉलोनी, जयपुर

9. आर्यसमाज जालोरियां का बास जोधपुर का 39वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न– आर्यसमाज जालोरियां के बास जोधपुर 39वां वार्षिक उत्सव एवं नववर्ष का स्वागत कार्यक्रम के प्रथम दिवस में ध्वजारोहण के पश्चात् नव सवत्सर यज्ञ श्री राजेश कुमावत, श्री धनराज सांखला, डॉ. आर्य त्रिलोक सांखला सपत्निक यजमान के सान्ध्यि में सम्पन्न हुआ। द्वितीय दिवस में यजमान जोडों द्वारा विशेष यज्ञ आचार्य रामनारायण शास्त्री एवं आचासर्य विमल शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराया गया। यज्ञ पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पूर्व प्रधान एवं महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास जोधपुर के प्रधान श्री विजयसिंह भाटी ने अपने उद्‌बोधन में सभी को साथ चलने का हाथ जोड निवेदन करते हुए कहा कि साथ कुछ नहीं जायेगा, सब मिलकर चले, प्रेम के साथ मिलकर कार्य करें यही साथ चलेगा।

'यः शनैश्चरति स शनैश्चरः' जो सबमें सहज से प्राप्त धैर्यवान् है, इससे परमेश्वर का नाम 'शनैश्चर' है।

This document was created with the Win2PDF “print to PDF” printer available at
http://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

http://www.win2pdf.com/purchase/

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी की गरिमामयी उपस्थिति में स्वामी दयानंद सरस्वती जी 200वी जयंती उपलक्ष्य पर डाक टिकट जारी.महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में विज्ञान भवन, दिल्ली में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की स्मृति में डाक टिकट का विमोचन।

वजीरपुर, कटियां वालीं गांव आर्य समाज,अबोहर ,पंजाब में विश्व के महान इतिहासकार प्रो राजेन्द्र जीज्ञासु जी ने हनुमानगढ़ टाउन के पदाधिकारियों को सम्मानित किया।

बीकानेर 02/अप्रैल/2023 गाँव सांइसर नोखा भाजपा के अध्यक्ष श्रीमान भंवर लाल जी बिशनोई के घर वेद प्रचार रथ। संचालक स्वामी श्री चेतनानन्द सरस्वती बीकानेर जनपद आर्यसमाज के जिला अध्यक्ष श्री गोवर्धन सिंह आर्य आदि ।

डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/214/2023-25

आर. एन. आई नं.10471/60

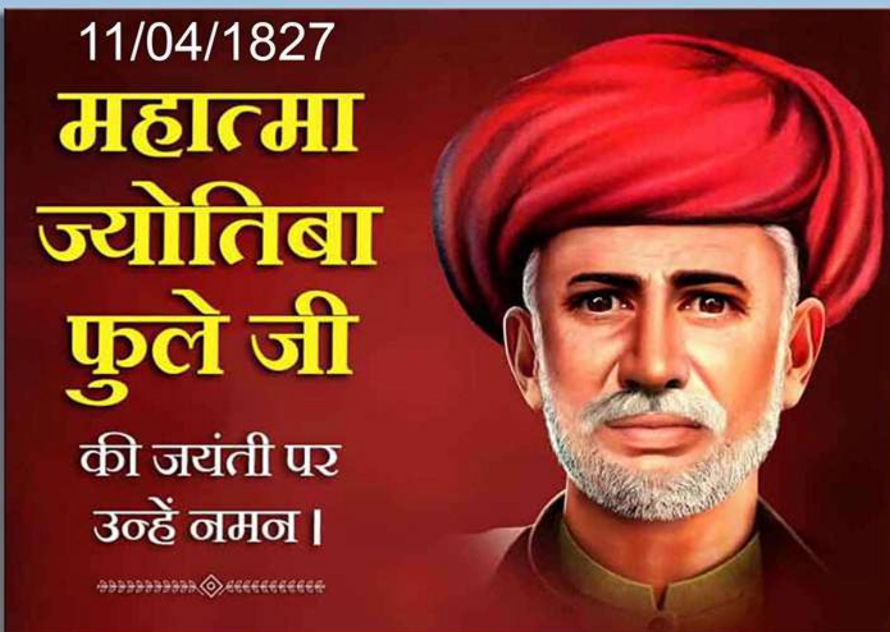

प्रेषक:-

सम्पादक
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर-302004

प्रेषित